Knowledgeable Research Vol 1, No 6, January 2023. ISSN 2583-6633

Knowledgeable Research
An International Open-access Peer-reviewed Journal
Vol-1, No-1, *Janury 2023*
Web: http://www.knowledgeableresearch.com/

पहाड़ी शैलियों के लघु चित्रण हेतु रंग तैयार करने की पारम्परिक वर्ण विधि

डा0 बलबिन्द्र कुमार (शोधार्थी),

अतिथि संकाय (सहायक आचार्य) पहाड़ी चित्रकला ,

अर्न्तबिषयक अध्ययन विभाग

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला–05

Email: balbinderkangri9@gmail.com

ABSTRACT:

Preparation of colors The names of the colors in the combination of Pahari paintings were often written on the blueprints by the painters for memory. In fact, these are shades of colors like:- Badami-like the color of almonds, Cherai-the color of the face, Lajvardra-this is blue color. For example, if the pigeon is almost the same gray color. In doves, it is necessary to have red freckles in that gray complexion. The vegetable will be dark green and the pistachios will be of pistachio color. Some others like this are parrot, coral, melon, toru-flower, purple, rose, ginger, amber, Kiran, vermilion, and khaki.

KEY WORDS: Traditional methods, Color preparation, Miniature painting, Pahari styles

रंग तैयार करना पहाड़ी चित्रों के संयोजन में रंगों के नाम अक्सर खाकों पर चित्रकारों द्वारा याददाश्त के लिये लिख दिये जाते थे। वास्तव में ये रंगों की रंगतें होती हैं जैसेः– बादामी–बादाम के रंग जैसा, चेराई–चेहरे का रंग, लाजवर्द्र–यह नीला रंग है। यथा–यदि कबूतरी लगभग एक सा सलेटी रंग है। फाख्तई में उस सलेटी रंगत में लाल झाई का होना अनिवार्य है। सब्जी गहरा हरा और पिस्तई का पिस्ते जैसा रंग होगा। ऐसे ही कुछ अन्य तोतई, मूँगिया, तरबूंजी, तोरू–फूलाँ, जामूनी, गुलाबी, सिगंरफ, अम्बरी, किरन, सिन्दूरी, खाकी एवं मोर–पंखी आदि नाम प्रचलित थे वहीं चित्रों में प्रयुक्त रंगों को चार मुख्य भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(1) मूल व भूमि (खनिज) रंग (2) वनस्पति रंग (3) आक्साइड रंग (4) धातु रंग

(1) मूल व भूमि रंग (अर्थ कलर)

पृथ्वी में समाहित विभिन्न खानों, जमीन से प्राप्त रंगीन पत्थर व रेत के रूप में विभिन्न रंग उपलब्ध होते है। यह मुख्यतः इस प्रकार है :–

(क) सफेद– यह रंग सफेद खड़िया दो रूप में पाया जाता है पहला रूप फूल खड़िया अैर दूसरी काठ खड़िया कहलाती है। लघु चित्र हेतु फूल खड़िया प्रयोग में लायी जाती है। जिसकी

Knowledgeable Research Vol 1, No 6, January 2023. ISSN 2583-6633

खान जयपुर के निकट पूर्व की ओर जयपुर दौसा सड़क मार्ग पर स्थित ग्राम बांसखो में है। तथा उदयपुर क्षेत्र के मंगरूप गांव की खड़िया भी बहुत अच्छी होती है।

(ख) काला– चित्र में काला रंग मूल रंग होता है। जो तिल के तेल के दीये के ऊपर दीपक रखकर काजल से प्राप्त किया जाता है। फिर इस काजल को बबूल की गोंद में थोड़ा पानी मिलाकर हल्का घोटते हुए ताव देकर काला रंग तैयार किया जाता है।

(ग) संग्रफ– इस रंग का नाम जिसे हंसराज व हींगुल भी कहते है यह पारे के समान भारी पत्थर रूप में पाया जाता है। यह दो प्रकार का होता है– एक रूमी और दूसरा काठा। रूमी के बीच में सूइयाँ जैसी दिखाई पड़ती है और लघु चित्रों में इसी संग्रफ का प्रयोग होता है। इसकी रंगत अंग्रेजी नाम स्कारलेट रेड जैसी होती है। इस पत्थर को भेड़ के दूध में घोटकर नींबू के रस के साथ कई बार पानी डालकर नितारा जाता है क्योंकि नीचे के भाग में पारे की अंश मात्रा अधिक होती है। जिसका प्रयोग चित्रों में नहीं होता।

(घ) रामरज– यह रंग अंग्रेजी यलो ऑकर जैसा होता है। वास्तव में यह पत्थर के रूप में होता है और बाजार में यह पाउडर के रूप में मिलता है। इस रंगत को तैयार करने के लिये नितार कर इसकी मिट्टी अलग की जाती है, फिर घोटकर ही काम में लाया जाता है।

(ङ) गेरू– यह दिखाई देने में भूरे रंग का पाउडर रामरज की तरह होता है व बाजार में मिल जाता है। इसे उपयोग में लाने की विधि भी उपरोक्त ही है। यह गाँव में किवाड़ों को रँगने या आँगन सजाने के काम में ली जाती है। इसे हिरमच भी बोलते हैं।

(च) हराभाटा– यह अंग्रेजी के टेरावर्ट रंग से मिलती–जुलती रंगत का पत्थर होता है इसे भी घिस, घोट व नितार कर काम में लिया जाता है। इसमें गोंद मिलाने की आवश्यकता नहीं होती। सपाट रंग लगाने के लिये इसे तीन–चार बार लगाना पड़ता है।

(छ) मुलतानी मिट्टी– यह मिट्टी हल्की पीलापन लिये या सफेद न होने के कारण इसका प्रयोग चित्रकारो ने कागज पर अस्तर के रूप में किया जाता है। इसकी रंगत पुराने कागज जैसी ही दिखाई देती है। राजस्थान के बीकानेर के आसपास मुल्तानी मिटटी खूब मिल जाती है।

(ज) लाज वर्द– यह नीला रंग है। यह रंग हल्के नीलम का चूर्ण होता है, जिसको पीसकर गोंद के साथ मिलाकर प्रयोग में लाया जाता है। लघु चित्रों में इसका सर्वाधिक उपयोग किया जाता है।

(झ) पीला रंग– पीले रंग को (खनिज आक्साइड) माना है जो पेवड़ी से बनता है। भारत में पीले रंग का खनिज दो प्रकार से उपलब्ध है, जिनकी रंगतें अलग–अलग होती है।

(अ) हरताल– हरताल का वर्णन प्राप्त होता है। यथा–

हरितालं सुधा लाक्षा तथा हिगुलकं नृप। नीलं न मनुजश्रेष्ठ तथाऽन्ये सन्त्यनेकशः।।

यह रंग दो प्रकार का होता है–गोदन्ती और वर्की हरताल। गोदन्ती की रंगत सफेद होती है। लघु चित्रों में वर्की हरताल काम में आती है। जिसका रंग हल्का पीलापन लिये तुरई के फूल जैसा होता है। इस रंग को थोर के दूध में घोटकर नींबू के रस डालकर साफ किया जाता है। यह हरताल शुद्धि की एक लम्बी तकनीक है।

(आ) मैनसल– यह भी एक अन्य रंग है जो शिगंरफ की भान्ति सूईदार सा रहता है। इस रंग को घोंटने पर प्राप्त रंग गहरा पीला रंग मिलता है। इस रंग को भी भेड़ के दूध में घोटा जाता है फिर नींबू का रस डालकर साफ किया जाता है।

Knowledgeable Research Vol 1, No 6, January 2023. ISSN 2583-6633

(इ) सीलू– (ऐमेरल्ड ग्रीन) सीलू एक चीनी नाम है। जिसमे 'सी' का अर्थ है पत्थर और लू का अर्थ होता है हरा। अर्थात् पत्थर का हरा रंग। ईरानी चित्रकार इसे दाना फरंग कहते थे। यह पत्थर मध्य एशिया से या अफगानिस्तान से आता था। बाद में सन् 1814 में आस्ट्रिया द्वारा कृत्रिम दाना फरंग को निर्मित किया गया जो मूल सीलू से सस्ता होता था। आजकल कृत्रिम सीलू ही मिलता है। इसका प्रयोग 19वीं शताब्दी में बने लघु चित्रों में खूब हुआ है।

(2) वनस्पति रंग :– यह रंगं पेड़–पौधों, वनस्पति के विभिन्न भागों से प्राप्त होते है। यह रस, लाख आदि के रूप में या सीधे प्राप्त हो सकते हैं, इस तरह से प्राप्त होने वाले रंग निम्न प्रकार के है:–

(क) देसी नील– नील दो प्रकार का होता है एक तरह का अड़क नील जो दवा में काम आता है। चित्रकारों द्वारा काम में लाने वाली नील के पौधों की खेती होती है। जिसकी लम्बी–लम्बी शाखाओं के गट्ठर को पानी के हौज में पत्थरों के नीचे 24 घण्टे दबाकर रखते है फिर बाहर निकाल देते है। और इस पानी का रंग कुछ अंगूरी हो जाता है। उसके बाद इस पानी में चूने के निथरे पानी के दो–तीन घड़े डाल दें फिर दो व्यक्ति सुबह से दोपहर तक उसके विच खड़े होकर अपने हाथों के थपेड़ों से पानी हिलाते रहतें हैं फिर पानी नीला जैसा दिखाई देने लग पड़ता है। उसके बाद एक घड़ा चूने का पानी मिलाकर पानी को गोलाई में घोलकर किनारे–किनारे से घुमाते रहे फिर शाम तक यह पानी गुलाबी सा हो जाता है इस तरह नीले रंग के सूक्ष्म कण हौज के नीचे बनी छोटी कुण्डी में एकत्रित हो जाते हैं फिर पानी को निकाल दिया जाता है तथा शेष नीचे कूण्डी में जमा नीले रंग से भी इसमें से पानी की मात्रा को बालू रेत से सोखा दिया जाता है। बाद में रात भर इसे रखने से यह घोल जम जाता है। सुबह सुखकर नील की छोटी–छोटी बतासियाँ बना ली जाती है। अतः इसे बतासी नील भी बोलते हैं।

बसन्त ऋतु के आसपास पलाश के फूलों से प्राप्त गहरा लाल रंग मिलता है। विष्णुधर्मोत्तर में पलाश का उल्लेख जिसमें पलाश के लाल को नीले में मिलाने व उसमें श्वेत मिलाने से नील ज्यादा नीला लगने का आभास होता है।

नील–पीत–व्यतिकृतिः पलाश इति शस्यते। सशुद्धश्वेतमिश्रश्च नीलाभ्यधिक एव च।।

(ख) लाल रंग–एक– यह लाल रंग बेरी, पलाश या पीपल की छाल से प्राप्त कर तैयार किया जाता है। पीपल की छाल को पानी से साफ करने के बाद बारीक कूटकर सुहागे के साथ लोहे की कढ़ाई में गरम करने से रंग निकलता है। प्राप्त इस रंग को रूई में जमाया जा सकता है नही तो इसको गाढ़ा कर टिकियों के रूप में सुरक्षित रखा जाता है। पतंग की लकड़ी के लाल तथा बबूल की अन्दरूनी छाल से गुलाबी रंग मिलता है। दूसरा– बेरी की लाख को पानी में उबाला जाये तो ठंडा करके यह लाख ऊपर जम जाती है और पानी में शेष लाल रंग रह जाता है। इसको उबालने से पहले दो–तीन दिन तक मिट्टी के पात्र में भिगोकर रखा जाता है तथा उबालते समय थोड़ा सुहागा और पठानी लोध डालनी पड़ती है। क्योंकि सुहागा रगं को खींचता है तथा पठानी लोध गोंद का काम पूरा करती है। इसमें रूई का चूँखा डालकर सुरक्षित रखा जा सकता है।

(ग) पीला रंग– यह रंग केसूला नाम के फूलों से हल्का केसरिया रंग मिलता है। यदि इस रंग में चूना मिलाया जाये तो यह लाल हो जाता है। अन्य पीला रंग जोकि परारेवण से पारदर्शी रूप में प्राप्त किया जाता है। सरारेवण को पीसने के बाद पानी में घोला जाता है । जो कि स्वयं ही चिपचिपा होने की बजह से गोंद का कार्य करता है।

Knowledgeable Research Vol 1, No 6, January 2023. ISSN 2583-6633

(घ) **काला रंग–** इसके लिये त्रिफला (हरढ़, बहेड़ा आँवला) को लोहे के पात्र में भिगोकर रखा जाता है जो काला रंग छोड़ता है। या सिर्फ आँवला ही लोहे के बर्तन में भिगोने से काला रंग बनाया जाता है। वही आँवलों को जलाकर भी काला रंग बनाया जाता है। फलो में अनार के छिलके लोहे के पात्र में भिगोकर भी काला रंग प्राप्त किया जाता था। और यदि किसी अन्य धातु के पात्र में भिगोये जाये तो मैला पीला रंग तैयार होता है।

(ङ) **हरा रंग–** वनस्पति में यह पशुओं के चारे के रूप में रजका हरे रंग के पत्तों से प्राप्त रस है इसके हरे रंग को मिठाई हेतु दानों के रूप में डालते है। उपरोक्त लाख से प्राप्त लाल रंग यदि सज्जी खार के साथ ताम्बे क बर्तन मे ंएक डेढ घण्टे उबाला जाय तो वो हरा हो जाता है।

(च) **कत्थई–** यह कत्था चित्रों में काम लाया जाता है। यह रंग धोल नाम की लकड़ी से निकाला जाता है, यह लकड़ी अन्दर से लाल रंग की होती है। इसके रंग को किसी भी अन्य रंग में मिला देने से उसकी तिव्रता को कम किया जाता है। तथा इस रंग में चूना मिला देंने से यह लाल रंग में परिवर्तित हो जाता है।

(3) आक्साइड या रासायनिक रंग

यह रासायनिक रंग या आक्साइड रंग किसी पदार्थ को जलाकर, उसकी भस्म या किसी अन्य पदार्थों के मिश्रित करने से रासायनिक प्रक्रिया द्वारा तैयार किये जाते है।

(क) **सफेद रंग–** सफेद रंग को बनाने के लिये रांगें एवं जस्ते को जलाया जाता है। जस्ते का आक्साइड सफेद रंग का होता है।

(ख) **सिन्दूर–** सिन्दूर एक कृत्रिम रंग है। सिन्दूर को बनाने की विधि के अधार पर ही विशेषज्ञ इस सुन्दर वर्ण को तैयार करते है तथा सिन्दूर बनाने हेतु मुख्यतः सामग्री एक सेर सीसा ,सांभर नोन आध सेर, आधा पाव सुहागा, शोरा डेढ पांव लाकर प्रथम कढ़ाई चूल्हें पर चढ़ावें। फिर सीसे को उसमें पिघलायें जब सीसा पिघल जाये तो शोरे की भरकर चुटकी सीसे के ऊपर बुरकायें और चमच आदि से हिलाकर उसमें सांभर की चुटकी डाल दें फिर इसी तरह हिलाते रहे इसी प्रकार अब सुहागे की चुटकी डालें और चमचे से हिलाये यह प्रक्रिया तब तक करे जब तक यह सीसा खूब जलकर राख न हो जाये फिर इसी तरह से पहले शोरा की चुटकी फिर सांभर नोन की और इसके बाद सुहागे की चुटकी डालकर चमच आदि से हिलाना चाहिये। परिणामस्वरूप बढ़िया सिन्दूर तैयार हो जाता है।

(ग) **जंगाल–**यह हरी रंगत का होता है। जिसका प्रयोग प्राचीन लघुचित्रों में बहुत किया जाता था। इस रंग को बनानें की एक विधि है कि एक ताम्बे के पात्र में ताम्बे का चूर्ण सेर भर और नौसादर दो सेर डाल दें फिर उसमें निम्बू का रस निचोड़ दें इस समरत सामग्री से अंगुल भर उंचा खाली स्थान रखकर पात्र के मुख पर कपड़ा बांध दिया जाता है फिर चालीस दिन तक रखें बाद में सामग्री को पीसकर सुखा लें हरा जंगाल तैयार हो जाता है। इस रंग को बनाने की दूसरी विधि थी किसी मिटटी के छोटे पात्र में ताम्बे का चूर्ण डाले फिर उसमें तेजाब डालकर पात्र का मुख बन्द करके मिटटी में जमीन में दबा दें कई दिनों बाद यह ताम्बे का यह चूर्ण बारीक हो चुका होगा जिसे खरल में घिसकर आवश्यकतानुसार सरेस मिलाकर प्रयोग में लाया जाता है।

(घ) **गहरा नीला–**यह गहरी नीली रंगत का होता है यूरोप से सोलहवीं शताब्दी में आयात किया जाता था यह लाल रंग के सार तत्व होने के कारण यह कीमती रंग होता था। सन 1818 ई० में रासायनिक विधि से गहरे नीले को तैयार किया जिसका भारत में आयात हुआ

Knowledgeable Research Vol 1, No 6, January 2023. ISSN 2583-6633

तथा 19 वीं शताब्दी के भारतीय लघु चित्रों में इस रंग का प्रयोग दिखाई देता है।

(ङ) कृमिदाना–कृमिदाना लाल रंग हेतु काम आता है। लाल रंग हेतु रक्त का उल्लेख विष्णुधर्मोत्तर में भी मिलता है। यथा–

रक्ता रक्तोत्पलश्यामा छविर्भवति शोभना।सापि नानाविधानन्यान्वर्णान्विकुरुतेबहून् ।। 24।।

कृमि का प्रयोजन कीट से है। अरबी में इसे कर्मिल कहा जाता है, जिसका अर्थ कीट विशेष से प्राप्त रंग है। कृमिदाना का पूरा अर्थ उस रंग से है, जो कृमि (कीट) विशेष से प्राप्ति किया जाता है और दाने के रूप में मिलता है। डॉ मोतीचन्द्र ने स्पष्ट किया है कि प्राचीन काल में लाल रंग एक प्रकार के कीट, जो पलाश के पेड़ों सा थूहर पेड़ों पर मिलता था, से प्राप्त किया जाता था। विष्णुधर्मोत्तर तृतीय खण्ड, में भी उल्लेख है कि लाल की दो रंगते हैं। या लाल रंग को लोधरा के साथ मिलाने से गहरा लाल मिल सके या इस लाल को सफेद रंग के साथ मिलाने पर कमल जैसा रंग तो मिल सकता है, गहरा लाल नहीं।

(च) गऊगोली–यह अत्यधिक विवादास्पद रंग है, इसकी रंगत गहरी पीली कुछ केसरिया लक लिये होती है, जो इसका विशेष आकर्षण है। गऊगोली से मिलती–जुलती रंगत का गोरोचन होता है। ''गो मस्तकस्य पित्त''। यह गाय के सीगों के बीच मस्तक में होता है। इसका उपयोग यन्त्रादि लिखने एवं मांगलिक कार्यों में होता है। शब्दकोष में गोरोचन को पीला खनिज माना है यथा–

गोरोचं–हरिताल इति राजनिर्घण्ट' तथा गोरोचना–गोर्जाता रोचना हरिद्रा इव।

स्वनाम ख्यात पीतवर्णाद्रव्यं तत्तु गोमस्तकस्य शुष्कपित्तं

विशेषयेद्वास्ति गतं सश्रुकं वीर्य मूत्र सपितं पवनः कफं वा।

यदायदाश्मश्युपाजयते च क्रमेण पित्तश्चिव रैचना गो।

गाय के गाल ब्लैडर में जो पित्त होता है, जमने पर उसकी गोली बन जाती है। गाय के मस्तक में पीयूष ग्रन्थि होती है वही गोरोचन है। गाय जब मर जाती है तब यह द्रव्य सूख जाता है। गोरोचन में यदि चूना डाल दिया जाय तो इसका रंग नही उड़ता अपितु चूना स्वयं पीला हो जाता है। पहले यह तिब्बत की ओर से आती थी।

(4) धातुरंग :– सेना, चाँदी और रांगे की हिलकारी का प्रयोग लघु चित्रों में हुआ है। इसे रंग की तरह पीस कर नहीं लगाया जा सकता। धातु रंगों में सोने, चाँदी व ताम्बे का उल्लेख विष्णुधर्मोत्तर में भी है।

रंगव्याणि कनकं रजतं ताम्रमेव च। अभ्रकं राजवतं च सिन्दूरं त्रपुरेव च।।

सोने के वर्क दो प्रकार के काम में आते है। पहली विधि में वर्क सीधे छाप दिये जाते है। इसके लिये सरेस व गुड़ का मिश्रण वांछित स्थान पर वांछित आकार में लगा दिया जाता है। बाद में मुँह के भाप से नमी देकर सोना छाप दिया जाता है। छोटा आकार या बारीक काम सोने की हिलकारी से होता है। सोने की हिलकारी बनाने के लिए गोंद, सरेस या शहद का गाढ़ा घोल थाली में लगा दिया जाता है उस पर सोने का वर्क बिछाकर चार अंगुलियों या हथेली से गोल घुमाकर रगड़ा जाता है। इस विधि से वर्कों का बारीक चूर्ण बन जाता है। यह आवश्यक है कि थाली पर लेप गाढ़ा हो। पतला द्रव्य होने पर वर्क की गोलियाँ बन जायेंगी, चाँदी के वर्कों की हिलकारी भी इसी प्रकार बनती है। घुटाई पूरी होने पर उसे थाली से किसी

Knowledgeable Research Vol 1, No 6, January 2023. ISSN 2583-6633

गिलास में ले लिया जाता है। ऐसे समय थोड़ा–थोड़ा पानी डालकर सारी हिलकारी उठा ली जाती है। अन्त में गिलास पूरा पानी से भर देते हैं। इसे 24 घण्टे छोड़कर सावधानी से पानी बाहर निकाल देते है। सोना या चाँदी बर्तन के आधार में बैठा रह जाता है। जब लगाना हो तो जरा सा गोंद मिलाकर लगाने के बाद ऊपर से ओपणी से घोट देने पर वह भाग सोने की तरह ही चमकने लग जाता है।

गोंद :– रंगों में बबूल व किकर की गोंद का उचित मात्रा में उपयोग किया जाता है।

सन्दर्भ सूचीः–

1. ओहरी वि०सी०– द तकनीक ऑफ पहाड़ी पेंटिग– 2001
2. ओहरी वि०सी०– आर्टस ऑफ हिमाचल शिमला–1975
3. किशोरी लाल वैद्य, ओमचंद हाड़ा– पहाड़ी चित्रकला, 1969, दिल्ली
4. गोस्वामी बी०एन० –पहाड़ी पेंटिगस : द फेमिली एस बेसिस ऑफ स्टाइल– मार्ग 21:4–1968
5. चन्द्र मोती– दा टेकनीक ऑफ मुगल पेन्टीगं लखनउ–1949
6. द्विवेदी प्रेमशंकर : दूबे बिन्दू '' चित्रसूत्रम् (विष्णुधर्मोत्तर पुराण में चित्रकला), काशी हिन्दू वि0 वि0 वाराणसी–5, 1999
7. सुमहेन्द्र, महेन्द्र कुमार शर्मा– राजस्थानी रागमाला चित्र–परम्परा ,पब्लिकेशन स्कीम जयपुर, भारत,1990,